GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN 2348-2397

Special Issue

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 7 • Issue 25 • January to March 2020

Library
3.11.2020

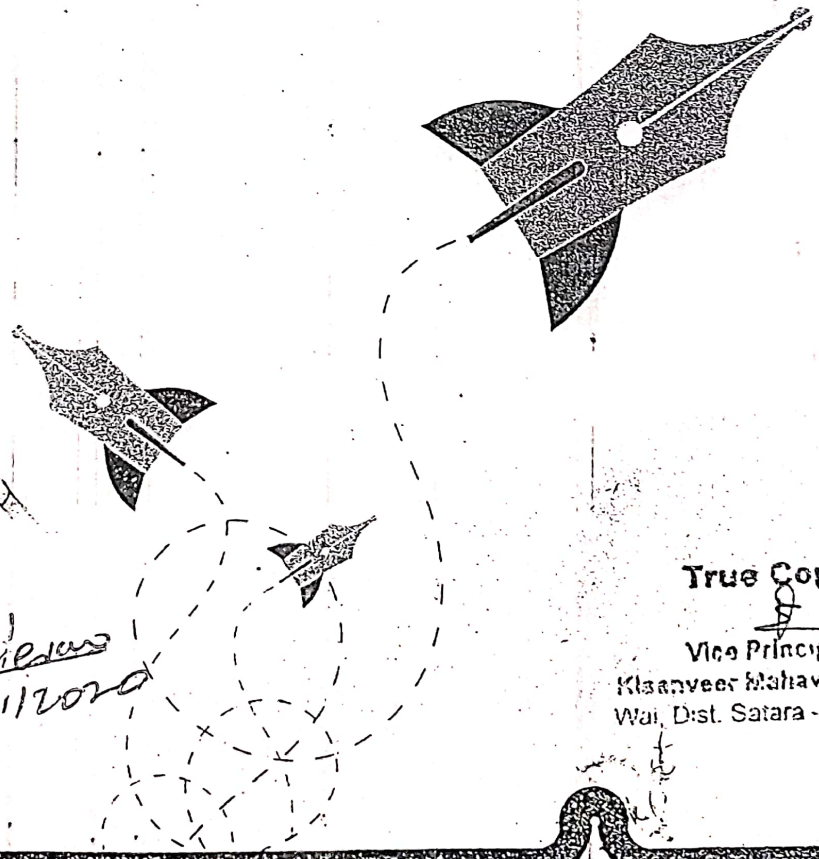

3/11/2020

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 803

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

Sanchar
Educational & Research Foundation

Scanned with OKEN Scanner

Complimentary copy
26

SPECIAL ISSUE

Govt. of India- RNI No. : UPBIL/2014/56766

APPROVED UGC CARE

ISSN No. 2348-2397

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

शोध सरिता

• Vol. 7 • Issue 25 • January - March 2020

== संपादक मण्डल ==

डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. अर्जुन चव्हाण
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

डॉ. कुमुद शर्मा
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. सुधीर प्रताप सिंह
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. अब्दुल अलीम
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

डॉ. गिरीश पंत
जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. जय शंकर बाबू
पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय, पाण्डिचेरी

डॉ. आशीष श्रीवास्तव
विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन पश्चिम बंगाल

डॉ. अरूण होता
पश्चिमवंग विश्वविद्यालय, बारासात, कोलकाता

डॉ. भारत नामदेव भोसले
प्राचार्य, प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय देऊर, महाराष्ट्र

डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे
अध्यक्ष हिंदी विभाग, प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय देऊर, महाराष्ट्र

== प्रधान संपादक ==
डॉ. विनय कुमार शर्मा
अध्यक्ष
संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai Dist. Satara - 412 803

संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ (उ0प्र0), भारत द्वारा प्रकाशित

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

1.	समकालीन हिंदी कविता में जंनचेतना के स्वर	प्रा0 बहिरम. देवेंद्र मगनभाई	1
2.	'धूमिल' लिखित 'बीस साल बाद' कविता में जनचेतना	डॉ0 सरोज पाटील	5
3.	डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास में जन चेतना	डॉ0 रामाधार प्रजापति	8
4.	"कुणबे की औरत" कहानी मे जनचेतना	दिपाली विकास जाधव	11
5.	'संसद से सड़क तक' में सामाजिक–राजनीतिक चेतना	डॉ0 अनंत केदारे	13
6.	समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित भूमंडलीय चेतना	डॉ0 अशोक मरळे	17
7.	निम्नवर्गीय समाज में जनचेतना का प्रतीक ''नीला आकाश''	डॉ0 दिलीप कुमार कसबे	20
8.	भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में जनचेतना	डॉ. सौ. सविता लालासो नाईक निंबाळकर	24
9.	हिंदी दलित कविता में जनचेतना के विविध आयाम	डॉ0 शाहनाज महेमुदशा सय्यद	27
10.	मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में चित्रित : आदिवासी विमर्श	प्रा0 डॉ0 राजेंद्र कैलास वडजे	31
11.	समकालीन हिन्दी काव्य में जनचेतना (धूमिल, लीलाधर जंगूडी और चंद्रकांत देवताले की कविताओं के संदर्भ में)	डॉ0 अनिल काळे	34
12.	'बकरी' नाटक में जनचेतना की सशक्त अभिव्यक्ति	प्रा0 डॉ0 नितीन धवडे	38
13.	धूमिल के काव्य में धार्मिक जनचेतना	डॉ0 नाजिम शेख	41
14.	समकालीन काव्य में सामाजिक चित्रण	डॉ0 सुकन्या मेरी जे.	44
15.	दुष्यन्त कुमार की गजलों में जनचेतना	डॉ0 प्रवीणकुमार न. चौगुले	48
16.	दुष्यन्त कुमार की गजलों में व्यक्त जनचेतना	नायकू मारुती दत्तात्रय	52
17.	'बारोमास' में शिक्षित किसान पुत्र एकनाथ की त्रासदी	डॉ0 एकनाथ श्रीपती पाटील	56
18.	हिंदी काव्य में नारी चेतना	प्रा. डॉ. बालाजी बळीराम गरड	59
19.	"मधु कांकरिया" के कहानियों में जनचेतना के विविध आयाम	प्रा. छगनराव मधुकर जठार	62
20.	'दोहरा अभिशाप' में चित्रित नारी चेतना : विविध आयाम	डॉ. नवनाथ गाड़ेकर	66
21.	'समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में जनचेतना के परिप्रेक्ष्य में नारी विषमता का चित्रण'	प्रा. मारूफ मुजावर	69
22.	जनचेतना के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी कविता	प्रा. रगडे परसराम रामजी	72
23.	समकालीन उपन्यासों में स्त्री केंद्रित विमर्शीय चेतना (मनु शर्मा कृत 'गांधारी की आत्मकथा' उपन्यास के संदर्भ में)	सचिन मदन जाधव	76
24.	'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास की जनचेतना	डॉ. जाधव सुग्राव नामदेव, संभाजी शामराव गेजगे	80
25.	आदिवासी लेखकों द्वारा लिखित उपन्यासों में आदिवासी समाज का जीवनसंघर्ष	डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात	84
26.	शशि सहगल के काव्य में चित्रित जनचेतना	प्रा. सुचिता संतोष भोसले	87
27.	अस्तित्व और अस्मिता के लिए एक स्त्री का संघर्ष – आत्मकथा शिकंजे का दर्द– सुशीला टाकभौरे	डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे	89
28.	'कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य की जनचेतना	प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे	92
29.	''मैं भी औरत हूँ'' उपन्यास में जनचेतना	प्रा. तेजश्री किसन पाटील	96
30.	गोहनदास नैमिशराय के उपन्यास में–चित्रित दलित संघर्ष चेतना (महानायक बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के विशेष संदर्भ में)	प्रा अशोक गोविंदराव उघडे	98
31.	हिंदी नाटकों में प्रतिबिंबित जनचेतना	प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर	101
32.	हिंदी कविता में अम्बेडकरवादी सामाजिक चेतना (ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'बस्स! बहुत हो चुका' कविता संग्रह के विशेष संदर्भ में)	डॉ.गोरख निळोबा वनसोडे	105

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Satara - 412 803

Scanned with OKEN Scanner

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 25, January-March, 2020
Page Nos. 101-104

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

हिंदी नाटकों में प्रतिबिंबित जनचेतना

प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर

शोध सारांश

नाटक साहित्य क्षेत्र में अन्य गद्य विधाओं की तुलना में सबसे अधिक प्रभावात्मक विधा रही है। नाट्यकृति वस्तुतः एक ही समय में देखी, सुनी और पढ़ी जाती है। किसी भी मूल्याधिष्ठित विचारका प्रचार–प्रसार करने के लिए इस विधाका उपयोग सदियों से किया जा रहा है। जनचेतना साठोत्तरी काल में हिंदी साहित्य में अवतरीत हुआ एक प्रमुख विचार है। जिसे अन्य रचनाकारों के समान हिंदी नाट्यसृष्टि में रचनात्मक कार्य करने वाले अनेक नाटककारों ने अपनी–अपनी नाट्यकृतियों में बड़ी ही सशक्तता एवं अत्यंत प्रामाणिकता से प्रस्तुत किया हुआ दिखाई देता है। इस विचार के माध्यम से हर एक नाट्यकृतिकार सामान्य मनुष्य को केंद्र में रखकर मानवता की मांग करता हुआ दिखाई देता है। सामाजिक विषमता को नकारकर समता, स्वातंत्र्य, बंधुता और न्याय इन संविधानिक अधिकारों के लिए संघर्षरत रहे सामान्य जनों के विचारात्मक व्यक्तित्व को पहचान देने का कार्य हिंदी नाटककारों ने पूरी इमानदारी से किया है। इसमें किसी भी तरह की दो राय नही है। हिंदी नाटकों में प्रतिबिंबित जनचेतना इसी का सत्य प्रमाणहै।

Keywords : संविधान, समता, स्वातंत्र्य, बंधुता, न्याय, अन्याय, दलित, पीड़ित, शोषित, उपेक्षित, आक्रोश, विरोध, विद्रोह, जातियद्वेश, दीनता, विषमता, अपमान, परिवर्तन, अधिकार आदि।

जनचेतना –

साहित्य में जनचेतना एक नई विचारधारा है। जो 1982 में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अवतरित हुई दिखाई देती हैं। वैसे तो आमतौर पर यह स्विकारा जा चुका है कि साहित्य मानविय चेतना के विविध आयामों का प्रत्युत्तर होता है। जिसमें हमारी कल्पना द्वारा नवीन मनोदशाओं की सृष्टि निर्मान की जाती है। इसी के फलस्वरुप हिंदी साहित्य क्षेत्र में लोक साहित्य, जनवादी साहित्य, जनचेतना और साहित्य, जनवादी समीक्षा आदि शीर्षकों को केंद्र में रखकर अधिक मात्रा में चर्चा होने लगी थी। इस पर विचार करते समय यह समझ लेना आवश्यक है कि मूलतः लोक या जन इन शब्द का संकेतार्थ क्या है? इस दृष्टि से देखे तो जन इस शब्द का कोशगत अर्थ है– "लोग, प्रजा, सर्वसाधारण जनता, अनुयायी, अनुचर, लोकजीवन, जन जीवन, जनसमूह"[1] आदि। चंचल चव्हाण के अनुसार "जन" लोग या समूह का प्रतिनिधी शब्द है।"[2] इस शब्द के साथ आज हिंदी में अलग–अलग शब्द बार–बार जोड़े जा रहे हैं। जैसे वाद, विचार, संघर्ष, चिंतन, चेतना आदि। इनमें से हर एक शब्द अर्थ की दृष्टि से अपना अलगसा दायित्व और अध्ययनात्मकता की दृष्टि से अपनी स्वतंत्र पहचान रखता है। जैसे चेतना शब्द – यह शब्द अलग–अलग विचारधाराओं के साथ भी जोड़ा जाता है, जिसे अर्थ की दृष्टी से "बुद्धी, मनोवृत्ती, ज्ञानात्मक मनोवृत्ती, स्मृति, सुधि, याद, चेतनता, चैतन्य और होश"[3] कहा गया है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी में इसे "सेंन्स, कान्शसेन्स, अन्डरस्टैंडिंग, इंटैलिजेंस"[4] कहा जाता है और मराठी में इसे ही संवेदना, नए विचार या जागृति कहते है। इसके संबंध में डॉ. रत्नाकर पाण्डे जी का मानना है कि "चेतना वह विशेष गुण है जो मनुष्य को जीवित बनाती है। चेतना वह तत्व है जिसमें ज्ञान की, भाव की और व्यक्ति की अनुभूति होती है। भारतीय दार्शनिकों ने इसे ही सच्चिदानंद कहा है।"[5] डॉ. पाण्डे जी दवारा प्रस्तुत इस मत से यह स्पष्ट होता है कि चेतनाशब्द दार्शनिक क्षेत्र से जुड़ा होने से चैतन्य और चैतन्य शब्द अध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़ जाने से सच्चिदानंद की अनुभूति का साक्षात्कार कराती है। "मनोविज्ञान की दृष्टि से चेतना मानव में उपस्थित वह तत्व है,जिसके कारण उसे सभी प्रकार की अनुभूतियाँ होती है। चेतना के कारण ही हम देखते, सुनते, समझते हैं और उनके विषयों पर चिंतन करते हैं। इसी से हमें सुख–दुःख की अनुभूति होती है।"[6] जन के साथ चेतना शब्द जुड़ जाने से इस संयुक्त शब्द का अर्थ होता है – जनजागृति, लोकज्ञान, जनसंवेदना और जनविचार। इसके अनुसार सन 1982 के आस–पास हिंदी के कुछ लेखकों ने पहली बार अपने साहित्य में जनवादी चेतना को प्रतिबिंबित करते हुए नये साहित्यिक विचारों की स्थापना की थी। परिणामतः आज की तिथि में हिंदी की सभी साहित्यिक विधाओं में जनवादी या

किसनवीर महाविद्यालय, वाई

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai Dist. Satara - 412 803

Scanned with OKEN Scanner

जनचेतना को केंद्र में रखकर साहित्य की निर्मिती अधिक मात्रा में हो रही है। डॉ. वासुदेव शर्मा जी के अनुसार "सामाजिक चिंता और उसके प्रति एक उदात्त मांगलिक दृष्टि,सत्य,न्याय,और स्वतंत्रता के लिए अनवरत संघर्ष, दलित, उपेक्षित, शोषित आदि के प्रति संवेदना तथा अन्याय, दमन और उत्पीडन का विरोध जनचेतना का मूलाधार है।" इस साहित्य में परंपरा,संस्कृति के प्रति आक्रोश, विद्रोह, संघर्ष, जनमानस की व्यथा, वेदना, उनका विशाद, दुःख, दर्द, दैन्य, आशा–निराशा, द्वेश, विध्वंस, जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण आदि का प्रमुख स्थान रहता है। मानो इस विचार का रचनाकार अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यमसे नई दुनिया बसाना चाहता है, सामाजिक न्याय, गुलामी के विरुद्ध विद्रोह, क्रोध, नकार, आक्रोश, संघर्ष के लिए सतत तैयार रहा दिखाई देता है। वह सदियों से चली आयी घृणित प्रथाओं और परंपराओं को नष्ट करना चाहता है। वह नयी मानवता, स्वतंत्रता, बंधुता समता से युक्त संस्कृति के निर्माण में लिन होना चाहता है। वह जातिय भेदभाव, वामाचार, हिंसाचार, भ्रष्टाचार को ठुकराकर दुःख, दास्य, अपमान की जिन्दगी बदलना चाहता है।

हिंदी नाटक और जन चेतना

गद्य साहित्य की विविध विधाओं की तुलना में नाटक विधा सबसे अधिक प्रभावात्मक विधा मानी जाती है। क्योंकि उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, संस्मरण, जीवनी जैसे अन्य सभी गद्य विधाऐं केवल पढ़ी जाती है। उसे पढ़ते समय पाठक एकालाप की स्थिती में रहता है लेकिन नाटक पढ़ा भी जाता है, सुना भी जाता है और देखा भी जाता है। कुछ नाट्याचार्यों के अनुसार, "नाटक इतनी सजीव एवं जीवंत रचनात्मक विधा होती है कि मंच पर खेला जाने वाला हर नाटक दर्शक को खुद की जीवन कहानी लगती है।" इस तरह अन्य गद्य विधाओं की तुलना में नाटक एक मात्र ऐसी सशक्त विधा है कि वह अपने पाठक या दर्शक के साथ मानो संवाद स्थापित करते हुए उन्हे अपने निजी जीवन की अच्छी–बुरी, सुखद–दुःखद घटनाओं का अनुभव देती है। यही कारण है कि साहित्य के विविध रूपों में नाटक, दर्शक या वाचक रूपी व्यक्ति के सबसे करीब रहने वाली साहित्यिक विधा बन जाती है। दूसरी ओर नाटक रंगमंच पर खेलते हुए दर्शकों ने देखना, वाचकों ने पढ़ना और उसमें अपनेपन को महसूस करना ही नाटक की सबसे बड़ी विशेषता होती है। इस दृष्टि से देखे तो हिंदी और मराठी [illegible] साहित्य [illegible] में भी ऐसी अनेक नाट्यकृतियां [illegible] पाठक एवं दर्शकों के मन में अपना विशेष स्थान प्राप्त [illegible] है। इनमें से अनेक नाट्यकृतियों में जनचेतना का प्रतिबिंब [illegible] हुआ है। हिंदी नाटककारों ने भी जनचेतना को [illegible] [illegible] [illegible] लिखे हुए मिलते है। [illegible] कठौती में गंगा [illegible] [illegible] [illegible] स्वदेश दीपक का [illegible] सबसे उदास कविता [illegible]

और राजेश कुमार का 'कह रैदास खलास चमारा।" इन नाट्यकृतियों में जनचेतना का प्रतिबिंब बड़ी ही सशक्तता से प्रतिबिंबित हुआ दिखाई देता है। इसके अनुसार इन सभी नाटकों में चित्रित हर एक पात्र विषमता, जातियता, छुआ–छूत, उच्च–निचता, जातिय अपमान, वर्णव्यवस्था, धार्मिक अन्याय, अत्याचार, आर्थिक शोषण, असामाजिक तत्वों का विरोध करते हुए समता, स्वातंत्र्य, बंधुत्व और न्याय के लिए लड़ता रहता है। संघर्षरत रहता है। इस लडाई में, इस संघर्ष में वह बार–बार हार जाता है फिर भी उसके मन में एक आशा कायम रहती है कि कभी न एक दिन इस विषमतावादी, जातियवादी, हिंसात्मक, अन्याय से पीड़ित हीन जाति के कारण अपमानित जीवन जीने की भयानक स्थिति में निश्चित ही परिवर्तन हो जाएगा। इस प्रकार के क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए इन नाटकों में चित्रित प्रमुख पात्र निरंतरता से प्रयत्न करते हुए दिखाई देते है। उदाहरणार्थ डॉ. एन.सिंह कृत 'कठौती में गंगा' नाटक में चित्रित रैदास और राजेश कुमार कृत "कह रैदास खलास चमारा" नाटक के नायक रैदास निरंतरतासे जातियवादी, विषमतावादी, वर्णवादी समाजव्यवस्था में परिवर्तन करने के लिए बार बार प्रयत्न करते है। हीन जाति में पैदा हुआ रैदास वह उच्च वर्णियों द्वारा अपमानित करने पर भी वे अपने समकालिन समाज में समता निर्माण करने की कोशिश करता है। वैसे तो प्रस्तुत दोनों नाटकों में चित्रित रैदास मूलतः मध्यकलिन संत कवि रैदास जी ही है मगर दोनों नाटककारों ने यहा रैदास के नए रूप को प्रस्तुत किया है, जो निरंतरता से धार्मिक पाखंड, अंधविश्वास, कर्मकांड, सामाजिक असमानता, जातिय भेदभाव, छुआ–छूत पर प्रहार करते हुए परिवर्तन की लड़ाई लड़ रहा है। नाटकों का नायक रहे रैदास का यह नया रूप निश्चित ही जन चेतना को प्रतिबिंबित करने वाला एक सशक्त रूप है क्योंकि, इसी चेतना के समान "वर्षों से चली आ रही वर्णवादी व्यवस्था से उत्पन्न जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, धार्मिक कट्टरता पर तार्किक ढंग से प्रहार करना उनका भी मुख्य लक्ष्य है।[8]" इन दोनों नाट्यकृतियों के रचनाकार अंत में अपनी ओर से स्पष्ट रूप से यह उद्घोषित करते है कि समाज में प्रचलित वर्ण व्यवस्था किये बिना न तो जाति भेद मिटेगा और न ही छुआ–छूत को मिटाया जा सकता है। वे भी समाज में समानता, बंधुता, मान–सन्मान और न्याय चाहते है. जैसे स्वदेश दीपक जी द्वारा प्रस्तुत 'कोर्ट मार्शल' नाटक का नायक रामचंदर और 'सबसे उदास कविता' नाटक की नायिका अपूर्वा चाहती है। रैदास के समान यह दोनों पात्र प्रारंभ से अंत तक निचली जाति में जन्मने से जातिगत अपमान, व्यवस्था द्वारा किया गया अन्याय और उच्च वर्णियों द्वारा बार बार किए गए घिनौने अपमान और भयंकर मानसिक अत्याचार का शिकार होते है। परिणामतः अंत में दोनों भी शस्त्र उठाते है। इनमें से 'कोर्ट मार्शल' का नायक रामचंदर फौजी

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai Dist. Satara - 412 803

Scanned with OKEN Scanner

3.1

...से शस्त्र उसके पास ही है, मगर सबसे उदास ... नायिका अपूर्वा पत्रकार होते हुए भी नक्सलवादी ... मुखिया बनकर सशस्त्र क्रांति की कोशिश करना ...। मगर उनका यह कृत्य संविधानिक दृष्टि से अपराध ...चेतना की दृष्टि से हिंसात्मक कृत्य होने से उन्हे अंतिमतः ... सजा सुनाई जाती है। समीक्षात्मक दृष्टि से देखे तो ... जी की यह दोनों नाट्यकृतियां अंत में भले ही जन ... प्रतिबिंबित नहीं करती मगर कथानक की दृष्टी से यह ...कृतियां जन चेतना का विद्रोहात्मक प्रतिनिधित्व करने ... नाट्यकृतियां लगती है।

...न चेतना को प्रतिबिंबित करने वाली अन्य हिंदी ... में प्रमुख नाट्यरचनाएं हैं। प्रताप सहगल का ... माताप्रसाद का 'तड़प मुक्ति की', और शंकर शेष का ... पानी'। प्रस्तुत तीनों नाटकों में अंर्तजातिय विवाह, ...ता, छुआ–छूत, धार्मिक, सामाजिक उच्चनिचता, ...वाद, उच्चवर्णियों द्वारा दलितों पर किए जाने वाले ..., अत्याचार और अपमान तथा शोषण सहित दलितों के ... आंतरिक भेदभाव पर प्रकाश डालते हुए जनचेतना को ...बित करते है। इनमें से प्रताप सहगलजी ने 'लड़ाई' नाटक ... 'तड़प मुक्ति की' में माता प्रसाद जी ने अंर्तजातिय विवाह ...स्या का चित्रण करते हुए दलित और सवर्णों के बीच की ... उच्च जाति के अहं को प्रस्तुत करते हुए सामाजिक ...ता पर प्रकाश डाला है। 'लड़ाई' का मनिष और 'तड़प मुक्ति ... नायिका सुषमा देवी दोनों उच्च वर्णिय जाति के है किंतु ... अपने अपने दलित, निचली जाति के प्रेमियों के साथ ...करना चाहते है। जब की दोनों के उच्च वर्णिय होने का अहं ...रिवारिक सदस्य विरोध करते है। किंतु नाटकों के अंत में ...ों का विरोध होते हुए भी इनकी शादियां करके दोनों ...कारों ने सामाजिक एकता का संदेश दिया है। जो की ...तना का केंद्रिय संदेश रहा है। समकालिन कुछ समाज ...ों को यह विश्वास था कि अंर्तजातिय विवाह होने से ...था टुटेगी और अलग–अलग धर्म, अलग–अलग जातियां ...रिश्तों नातों में बांध दी जाएगी तो सामाजिक एकता, समानता ...त ही स्थापित होगी। इसी बात का हवाला 'तड़प मुक्ति की' ...यिका उषा देवी देते हुए कहती है कि 'वर्ण और जाति ...था समाप्त करने के लिए अंर्तजातिय खान–पान का ...न किया जाए। यह वास्तविक उपचार नहीं है। इसका ...ेक उपचार अंर्तजातिय विवाह है। वर्ण और जाति प्रथा ...स्थिति में समाप्त होगी जब रोटी–बेटी का संबंध सामान्य ... में आए।[9]' यह रोटी–बेटी के संबंधों की की हुई वकालत ...ल में जातिविहीन, वर्ण रहित, वर्ग रहित समाज की कल्पना मूलतः अम्बेडकरवादी चेतना में समताधिष्ठित समाज की ... है जिसे साकार करने के लिए ऊपर लिखित दोनों नाटककारों ने अपनी अपनी रचनाओं में बड़ी सशक्तता से प्रतिबिंबित किया है।

"बाढ़ का पानी" शंकर शेष जी द्वारा रचित छुआ–छूत, जातिय उच्च–निचता, कुप्रथाएं, अस्पृष्यता, जातिय अहं, निम्न जातियों के प्रति रहा द्वेष, घृणा भाव जैसे अनेक विषमतावादी, असामाजिक मूल्यों को केंद्र में रखकर लिखा गया एक श्रेष्ठतम वैचारिक नाटक है। इस नाटक की कथा के अनुसार गाँव के उच्च वर्णियों ने अपने ही गाँव के अस्पृष्यों को गाँव से अलग करते हुए, डराकर, धमकाकर दूर टीले पर बसा दिया है ताकि इन अस्पृष्य जाति के लोगों की छांव तक उन पर न पड़े। गाँव के उच्चजाति के लोग अर्थात ठाकुर और पंडित अपने इस षडयंत्र में सफल होते है और गाँव के सभी अस्पृष्य न चाहते हुए डरकर ऊँचे टीले पर बस जाते हैं। इसी बीच बाढ़ आ जाती है और सारा गाँव और गाँव के सभी उच्च जाति के लोग खतरे में आ जाते हैं। तभी गाँव से दूर अछूत जाति के होने के कारण ऊँचे टीले पर भगाए गए लोग ही उन्हें आसरा देते हुए उनकी जान बचाते हैं। इस तरह जिन ठाकुरों ने उन पर अत्याचार किए, जिन पंडितों ने उन्हें बार–बार धमकाया, अपमानित करके गाँव से भगा दिया। उनसे बदला लेने के बजाय सारे अछूत लोग उन्हें अपने टीले पर आसरा देते हैं। इतना ही नहीं बेघर, बेसहारा बने ठाकुरों और पंडितों की वे सारे अछूत लोग मानवतावादी, समतावादी, बंधुत्ववादी भाव से सेवा करते हैं। उनका बस यही मानना है कि "मुसीबत के समय न जाति होती है, न धर्म। जब आदमी ही न रहेगा, तो कहां की जाति और कहां का धर्म।[10]" उनके अनुसार मुसीबत के समय मनुष्य बनकर एक दूसरे की सेवा करना ही सच्चा मानवधर्म है। आखिरकार दलितों की सेवा और मानवतावादी व्यवहार से प्रभावित हुए ठाकुरों और पंडितों की भी आँखे खुलती है और सदियों से चली आयी जाति प्रथा, छुआ–छूत की कुप्रथा नष्ट हो जाती है। टीले पर सामाजिक एकता का, आपसी बंधुत्व का भाव निर्माण हो जाता है। इस नाटक की समीक्षा करने वाले डॉ. नामदेव जी ने एक बहुत अच्छी बात कही है। उनके अनुसार 'इस नाटक की विशेषता इसी में है कि दलित, उपेक्षित और प्रताड़ित होने के बावजूद अपने मानवीय मूल्यों को नहीं छोड़ते जिसके कारण शेष ऊँची जाति के लोगों को अपनी हट धार्मिता छोड़कर उनके साथ आना पड़ता है। अतः सामाजिक एकता की एक अच्छी मिसाल है यह नाटक – 'बाढ़ का पानी'।[11]' जाति प्रथा नष्ट करके सामाजिक समता के मांध्यम से सच्चे मानवतावादी धर्म की स्थापना करने के लिए प्रयत्नशील रहे जनचेतना का प्रतिबिंब इस नाटक में शंकर शेष जी ने बड़ी ही सशक्तता से साकार किया हुआ दिखाई देता है। इन नाट्यकृतियों के अतिरिक्त आज हिंदी में माता प्रसाद के 'प्रतिशोध', 'धर्मपरिवर्तन', 'अछूत का बेटा', 'वीरांगना झलकारी बाई', श्री. एन.आर.सागर का 'मार्ग का कॉंटा', मोहनदास नैमिशराय का 'अदालतनामा', कर्मशील भारती का

ने यमराज', और रघुवीर सिंह अरविंद का 'इतिहास की पहली घटना' आदि प्रमुख हिंदी नाटको मे जनचेतना का प्रतिबिंब नाटककारो द्वारा चितारा हुआ दिखाई देता है।

निष्कर्ष :

अतः संक्षेप में संपूर्ण विषय के संबंध में इतना ही कहा जा सकता है कि जनचेतना आज के युग में विश्व की सभी भाषा के लेखकों के लिए साहित्य निर्मिती का एक विशेष उर्जास्त्रोत रहा है। यही कारण है कि हिंदी भाषा के नाट्यक्षेत्र में इस चेतना को प्रतिबिंबित करने वाली अनेक रचनाएं अब तक लिखी जा चुकी हैं और भविष्य में यह सिलसिला कायम रहेगा। किंतु दुर्भाग्यवश अब तक हिंदी मराठी नाटककारों ने केवल 'जाति अंत की लड़ाई' इसी एक मात्र विषय को अपने नाटकों में अधिकतर प्रस्तुत किया है। वैसे तो यह लड़ाई अब तक खत्म नहीं हुई है क्योंकि आज भी समाज में इस तरह की अनेक घटनाएं घटती हुई दिखाई देती है। इसका मतलब यही है कि जाति अंत की यह लड़ाई जाति के अंत तक लड़नी ही है इसमें कोई दो मत नहीं है किंतु इसके अतिरिक्त व्यक्ति स्वातंत्र्य से लेकर विश्व शांति तक तथा सर्व धर्म समभाव से लेकर मानवतावादी मुल्यों तक, खासगिकरण, जातिकिकरण, बाजारीकरण और उदारीकरण जैसे अनेक विषयों पर मानवहित तथा राष्ट्रहित की दृष्टि से काफी चर्चा की है। इसी तरह समता, स्वातंत्र्य, बंधुता और न्याय जैसे मूलभूत अधिकारों को उन्होने ही संविधानात्मक संरक्षण देकर आम आदमी का संपूर्ण जीवन सुखमय तथा समृद्ध बना दिया है। हिंदी नाटककारों ने इन सभी व्यापक विचारों का प्रतिबिंब अपने नाट्यकृतियों में उतार[illegible] जिम्मेदारी सभी साहित्यकारों की ही है क्योंकि जन[illegible] सर्वांगीण परिचय हर एक नागरिक को, हर एक समाज [illegible] पुनः करांना आज के समाज हित के लिए नहीं तो पूरे मनु[illegible] के साथ-साथ संपूर्ण देश की प्रगती, सुख, समृद्धी और [illegible] लिए अत्यंत आवश्यक है।

सन्दर्भ :-

1. हिंदी विश्वकोश खंड 4 पृ. 282
2. चंचल चव्हाण जनवादी समीक्षा, नये चिंतन, न[illegible] पृ. 184
3. संपा. श्यामसुंदर दास हिंदी शब्द सागर सात[illegible] पृ. 345
4. सर मेनीयर विलियम्स संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी पृ.[illegible]
5. डॉ. रत्नाकर पाण्डे हिंदी साहित्य : सामाजिक [illegible] पृ. 158 / 159
6. संपा. श्यामसुंदर दास हिंदी शब्द सागर सात[illegible] पृ. 346
7. डॉ.वासुदेव शर्मा जनवादी समिक्षा पृ. 42
8. राजेश कुमार कह रैदास खलास चमारा पृ.36
9. माता प्रसाद तड़प मुक्ति की पृ. 52
10. शंकर शेष बाढ़ का पानी पृ. 64
11. डॉ. नामदेव दलित समस्या और हिंदी के प्रयोगधर्मी ना[illegible] पृ. 60

□□□

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 803